श्री विमलनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री विमलनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.- 9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 ३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री विमलनाथ विधान

जय बोलिये

त्रिलोक चूड़ामणि,
अध्यात्म शिरोमणि,
सदा स्मरणीय,
जगज्ज्येष्ठ, सर्वश्रेष्ठ,
परमेष्ठी, विद्वान्, वक्ता विशेष्ट,
विश्वव्यापी, विश्वलोचन,
विश्वज्योति, आत्ममोती,
अत्यन्त निर्मल, अक्षय विमल
परमपूज्य
श्री विमलनाथ भगवान् की जय॥

भजन

(सोरठा)

विमलनाथ भगवान्, मुक्तिवधू परमेश्वरम्।
मिले भेद विज्ञान, अतः नमन जगदीश्वरम्॥

(लय : नहीं चाहिए दिल दुखाना....)

हमें चाहिए अब कृपा बस तुम्हारी।
यही भावना है, यही कामना है,अंतिम हमारी॥

नरकों में हमको तुम ना मिले थे,
स्वर्गों में केवल शिकवे गिले थे॥[2]
पशुओं में हालत[2], बुरी थी हमारी॥
हमें चाहिए अब कृपा..... ॥ 1 ॥

बचपन में हम तो, नहीं थे विवेकी,
यौवन में हमने मर्यादा फेंकी॥[2]
बुढ़ापे में जर्जर[2], काया हमारी॥
हमें चाहिए अब कृपा..... ॥ 2 ॥

भोगों में रोगों में खाने में पीने में,
मदमस्त थे हम इठला के जीने में॥[2]
आयी खबर ना[2], हमको तुम्हारी॥
हमें चाहिए अब कृपा..... ॥ 3 ॥

आशीष दे के कृपा जल बहा के,
'सुव्रत' को तारो अपना बना के॥[2]
यही प्रार्थना है, तुमसे हमारी॥
हमें चाहिए अब कृपा..... ॥ 4 ॥

श्री विमलनाथ विधान

स्थापना (दोहा)

विमलनाथप्रभु नाम का, है अतिशय आशीष।
भक्त जगत् का भक्ति को, झुक जाता खुद शीश॥

(लय : भव-वन में ....)

जय विमल प्रभो! जय विमल प्रभो!, जय विमल प्रभो! अतिशयकारी।
अब हृदय हमारे आओ प्रभु, तो हम भी हों मंगलकारी॥
जिस घट में तुमने वास किया, वह हृदय बना मुक्ति का घर।
कर्मों के बंधन टूट पड़े, जिन रस की धार वहे झर-झर॥

हे! निज चैतन्य विहारी जिनवर हृदय हमारे आओ-ना।
जो द्रव्य भाव नो कर्म रहित, वो शुद्धातम दिलवाओ-ना॥
हम उस पदवी के अभिलाषी, जो पदवी तुमने पायी है।
इसलिए आज हे विमलराज! यह अर्जी चरण लगाई है॥

(दोहा)

अर्जी सुनकर भक्त पर, करिए कृपा जरूर।
कल क्या हो सो भक्ति को, आज दास मजबूर॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं....)

(लय : नंदीश्वर श्री जिनधाम)

जल जैसा कंचन रूप, आतम का शोभे।
निर्मल सुख सिद्ध स्वरूप, अपना मन मोहे॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

तपता जलता संसार, क्या शीतल जग में।
जिनवाणी छायादार, सो हम प्रभु पग में॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

भवसागर क्षार अपार, कौन खिवैया है।
जिन तारण तरण जहाज, भक्ति नैया है॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

जब खिलते चारित फूल, भक्त भ्रमर गूँजे।
हो काम व्यथा तब धूल, मुक्ति स्वयं पूजे॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

निज का चखने को स्वाद, ले नैवेद्य खड़े।
जिनवर को करके याद, सादर चरण पड़े॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

यह मोह करे जग व्याप्त, जीते कौन बली।
दो अंतर ज्योति-आप्त, भागे मोह-खली॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं.....।

सब जले, जले ना कर्म, जो दुर्गन्धित हैं।
जब जले धूप दे धर्म, धर्मी वंदित हैं॥

जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

फल भोगें तो दें! रोग, जिससे जग रोता।
फल अर्पण से सुख योग, निज कालुष धोता॥
जो विमलनाथ जिनराज, खुश हैं वह पा के।
हम पूजें शीश नवाएँ, उस पर ललचा के॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

(लय : भव वन में....)

जब विमलप्रभु का नाम सुना तो, दर्शन की इच्छा जागी।
अब दर्शन करके मन नहिं माना, तो पूजन की लौ लागी॥
फिर पूजन से ये भाव बने कि, क्यों नहिं प्रभु सम बन जायें।
तो भाव भक्ति से अर्घ चढ़ा के, शीश झुकाके गुण गायें॥

अनुकूल रहें प्रतिकूल रहें, अब हमको इसकी आश नहीं।
हम सुखी रहें या दुखी रहें, इसकी भी कोई प्यास नहीं॥
बस नाथ आपकी पद रज से, हम निज का निज शृंगार करें।
जिनभक्ति नैया पर चढ़ कर, सब कुछ सह लें भव पार करें॥

(दोहा)

विमलप्रभु वरदान दो, नभ जैसे विस्तीर्ण।
सहनशील भू-सम बनें, सागर सम गंभीर॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

दशमी कृष्णा ज्येष्ठ में, तजे स्वर्ग सहस्रार।
जय श्यामा के गर्भ में, वसे विमल भर्त्तार॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चौथी शुक्ला माघ में, जन्मे विमल जिनेन्द्र।
कृत वर्मा गृह राज्य में, उत्सव करें सुरेन्द्र॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जन्म तिथि दीक्षा धरे, छोड़े पर-संसार।
श्रमण संत विमलेश को, वंदन बारम्बार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

षष्ठी कृष्णा माघ में, पाये केवलज्ञान।
विमलेश्वर अर्हंत को, नमस्कार धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आठें कृष्ण अषाढ़ को, विमल प्रभु को मोक्ष।
सम्मेदाचल से हुआ, जिनको सादर धोक॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्ण-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

(दोहा)

विगत दोष गुण कोष है, विमलनाथ जिनदेव।
शिव नेता को भक्त के, शीश झुके स्वयमेव॥

(ज्ञानोदय)

जिनके दर्पण जैसे निर्मल, ज्ञान लोक में जग झलके।
विश्व मलों को नाश चुके जो,उन्हें नमन हों पल-पल के॥
ऐसे विमलनाथ हम सबको, निर्मल कर दें मल हर के।
इसी लक्ष्य से जिनको पूजें, चरणों में माथा धर के॥ 1॥

विमलप्रभु जैसे बनने को, विनय सुनो हे! विमलेश्वर!
नाथ! आपके पद पर चलने, कहें कहानी चित देकर॥
पद्मसेन इक धर्मी राजा, एक छत्र जो राज्य करे।
कल्पवृक्ष सम प्रजा जनों के, न्याय नीति से काज करे॥ 2॥

तथा प्रजा भी राजाज्ञा को, पाल-पालकर पली-पुषी।
राजा को प्रभु मिले केवली, तब नमोस्तु की खुशी-खुशी॥
प्रभु से धर्म स्वरूप जानकर, अगली पर्यायें जानी।
केवल दो भव जग में हैं सो, उसने तप की भी ठानी॥ 3॥

ऐसा पर्व मनाया उसने, जैसे कि तीर्थंकर हो।
पद्मनाभ को राज्य सौंपकर, निकला स्वयं दिगम्बर हो॥
ग्यारह अंगों का अध्ययन कर, प्रभु ने की चाँदी-चाँदी।
नामकर्म के योग्य पुण्यकर, तीर्थंकर प्रकृति बाँधी॥ 4॥
चार-चार आराधन करके, अंत समय में मरण किए।
सहस्रार में सहस्रार की, इन्द्र विभूति वरण किए॥
जहाँ अठारह सागर उसकी, पूर्ण आयु थी भोगमयी।
चार हाथ ऊँचा तन उसका, जघन्य लेश्या शुक्लमयी॥ 5॥

वह आहार मानसिक करता, अणिमा-महिमा गुणवाला।
भोग-भोग चिरकाल स्वर्ग को, भूपर था आने वाला॥
तो काम्पिल्य नगर के राजा, कृतवर्मा की पटरानी।
जयश्यामा ने सोलह सपने, देख उन्हीं का फल जानी॥ 6॥

हुआ गर्भ कल्याणक तब ही, लहर खुशी की दौड़ी थी।
जयश्यामा ने पुत्र जन्म दे, अपनी राहें मोड़ीं थीं॥
देव जन्म अभिषेक पूर्ण कर, नाम विमलवाहन रक्खे।
ताण्डव नृत्य इन्द्र ने करके, भक्ति रंग डाले पक्के॥ 7॥

कुमार काल बिताकर प्रभु का, पर्व राज्य अभिषेक हुआ।
बर्फ-नगीना, देख विलीना, प्रभु को झट वैराग्य हुआ॥
लौकान्तिक देवों ने आकर, प्रभु की हाँ में हाँ-हाँ की।
चले देव दत्ता शिविका से, बेलामय जिनदीक्षा ली॥ 8॥

नन्दनपुर के कनक-प्रभु तब, राजा ने पड़गाहन कर।
दे आहार दान सुख पाया, पंचाश्चर्य पुण्य पाकर॥
तीन वर्ष छद्मस्थ बिताकर दीक्षावन में ध्यानी हो।
पूर्ण घातिया कर्म नशाए, पुजते केवलज्ञानी हो॥ 9॥

समवसरण में गंधकुटी में, सिंहासन कमलासन पर।
हुए विराजित जहाँ मेरु अरु, थे मंदर पचपन गणधर॥
विहार करके भव्य धान्य को, तुष्ट पुष्ट संतुष्ट किया।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, योग निरोध स्वरूप किया॥10॥

आठ हजार छह सौ मुनियों सह, मोक्ष अष्टमी को पाया।
काल अष्टमी तब से जग में, पुजने लगी बनी माया॥
फिर सौधर्म इन्द्र ने आकर, अंतिम शुभ संस्कार किया।
ऐसे विमलनाथ को हमने, नमोस्तु बारम्बार किया॥ 11॥

बुद्धू को जो बुद्ध बना दें, शुद्ध करें अभिशापों से।
हमें बचा कर निर्मल कर दें, हिंसादिक सब पापों से॥
उनको बुध ग्रह तक सीमित कर, क्या? अज्ञान नहीं होगा।
मन से 'सुव्रत' जय तो बोलो, क्या? कल्याण नहीं होगा॥12॥

(सोरठा)

सूकर जिनका चिह्न, विमलनाथ प्रभु नाम है।
सिद्ध बने हर काम, सादर अतः प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

विमलनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, विमलनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(चौबीस ठाणा वर्णन) (मद अवलिप्त कपोल)

जब तक है संसार, चार गति नाम कर्म हैं।
देव नरक तिर्यंच, मनुज को सदा भर्म हैं॥

नशे चार गति चक्र, मिले गति पंचम न्यारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 1॥

ॐ ह्रीं गति चक्र वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पाँचों इन्द्री नाम, हमें दुख ही दुख देते।
निज सम्पत्ति सुगंध, चुरा वो हम से लेते॥
हो इन्द्री दुख दूर, बने सुखिया परिवारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी ॥ 2॥

ॐ ह्रीं इन्द्रियकष्टवेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

षट् कायों में जीव, फँसे हैं कैदी जैसे।
भूले निज चिन्रूप, स्वयं वैदेही जैसे॥
देह जेल हो मुक्त, मुक्ति की मिले सवारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 3॥

ॐ ह्रीं काय वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मनो वचन तन योग, रोग पंद्रह आतम को।
कर्मों के संयोग, योग वियोग दें हमको॥
नाशें योग वियोग, बनें हम निज अधिकारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 4॥

ॐ ह्रीं योग वियोग वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

द्रव्य भाव दो भेद, नपुंसक नर-नारी को।
दिये वेदना वेद-खेद, हर संसारी को॥
वेद खेद हो नाश, बनें हम ब्रह्म-विहारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 5॥

ॐ ह्रीं वेद वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

हमको कसे कषाय, सदा पच्चीस तरह की।
आतम को दे राह, विरह की तथा कलह की॥

होंए हम निष्कषाय, तजें हम बैर-विकारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 6॥

ॐ ह्रीं कषाय वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आतम का गुण ज्ञान, जानता स्वपर कथा को।
अगर बना अज्ञान, गर्व दे महा व्यथा को॥
पायें केवलज्ञान, बनें सर्वज्ञ, सुखारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 7॥

ॐ ह्रीं ज्ञानाज्ञान वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

हिंसादिक हर पाप, दया करुणा को छीने।
बिना अहिंसा आप, चले हो कैसे जीने॥
दो संयम चारित्र, बनें हम सत्-आचारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 8॥

ॐ ह्रीं असंयम हिंसादिक वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दर्शन चार प्रकार, दिखाये देखे निज-पर।
आतम का सुख-द्वार, दिलाये अपना निज-घर॥
युगपत्-दर्शन होए, सु-लोकालोक निहारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 9॥

ॐ ह्रीं दर्शन वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मिलकर योग कषाय, जीव षट्-रंगा कर दे।
सुख-दुख वाले रंग, लेप कर लेश्या भर दे॥
लेश्या हर चित् पाँय, आइने जैसी प्यारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 10॥

ॐ ह्रीं लेश्या रंग वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्राणी भव्य अभव्य, बिना कर्मों के होते।
मोक्ष पाएँगे भव्य, अभव्य दुखी हो रोते॥

रत्नत्रय हो प्राप्त, बनें हम पर-उपकारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 11॥

ॐ ह्रीं भव्याभव्य वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो श्रद्धा पर्याय, देव गुरु शास्त्र धरम दे।
तत्त्वों का दे ज्ञान, निजी चैतन्य रतन दे॥
पायें वह सम्यक्त्व, मुक्त हों हर संसारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 12॥

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ज्ञान क्रिया उपदेश, समझने वाले संज्ञी।
बिन मन वाले जीव, सदा हैं दुखी असंज्ञी॥
समझें सार असार, तजें मन की बीमारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 13॥

ॐ ह्रीं संज्ञी असंज्ञी मनो वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आहारक भी जीव, अनाहारक भी बनते।
किन्तु कर्म के कार्य, स्वप्न में कभी न टलते॥
त्यागें दोनों भाव, बनें निज-गुण आहारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 14॥

ॐ ह्रीं आहारक अनाहारक वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मिलें मोह अरु योग, वही गुणस्थान कहाते।
दिलवाते नहिं मोक्ष, हमारा सौख्य नशाते॥
गुणस्थान कर नाश, बनें अनन्त गुणधारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 15॥

ॐ ह्रीं गुणस्थानवेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चौदह जीव समास, नहीं शुद्धातम पायें।
इनमें फँस कर जीव, रोंए गायें चिल्लायें॥

हर कर जीव समास, शुद्ध हों अतिशयकारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 16॥

ॐ ह्रीं जीवसमासवेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

छहों-छहों पर्याप्ति, तथा अपर्याप्ति इतनी।
हरें हमारा चैन, वेदना कैसी कितनी॥
हरें सभी पर्याप्ति, मिटे आकुलता सारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 17॥

ॐ ह्रीं पर्याप्ति अपर्याप्ति वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

व्यवहारी दस प्राण, जन्म देते अरु मारें।
जिनसे जीव सदैव, पाँय सुख दुख की धारें॥
निश्चय दर्शन ज्ञान, पाँय, नाशें व्यवहारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 18॥

ॐ ह्रीं प्राण वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दारुण दुख दे दान, हमें संक्लेशित करते।
संज्ञा चारों भेद, सदा अपमानित करते॥
हो संज्ञा दुख नाश, बनें इच्छा हर्त्तारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 19॥

ॐ ह्रीं संज्ञा इच्छावेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आतम के परिणाम, रहे चैतन्य विधायी।
दो के बारह भेद, उन्हीं में दस दुखदायी॥
युगपत् हों उपयोग, कही जिनकी बलिहारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 20॥

ॐ ह्रीं उपयोग वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आर्त्त रौद्र फिर धर्म, शुक्ल जो ध्यान कहाते।
दो हेतु संसार, तथा दो मोक्ष दिलाते॥

मिले भेदविज्ञान, बनें शिशु सम अविकारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 21॥

ॐ ह्रीं ध्यान वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिनसे आते कर्म, वही आस्रव कहलाते।
कुल सत्तावन भेद, असाता-साता लाते॥
बने निरास्रव संत, प्राणियों के उद्धारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 22॥

ॐ ह्रीं आस्रव वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चौरासी लख जाति, हमें मिल जाती यों ही।
जहाँ न आत्म समाति, कहाँ रह पाओ क्यों जी?
हरें जाति बन सिद्ध, सभी दुख विघ्न निवारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 23॥

ॐ ह्रीं जाति योनि वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो पुद्गल परमाणु, बनाते अपनी काया।
जाति भेद कुल लाख-करोड़ों की सब माया॥
शाश्वत बनें कुलीन, विश्व को मंगलकारी।
विमलप्रभु को तभी, नमन हो बारी-बारी॥ 24॥

ॐ ह्रीं कुल लिङ्ग वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य (शंभु)

नहिं भय खायें, नहिं घबरायें, हम तीरों या तलवारों से।
मुडें न पीछे, चलें न पीछे, इन दर्द भरी सरकारों से॥
हम तो अपनी, धुन के पक्के, जो ठान लिया कर छोड़ेंगे।
नाच बजा के, अर्घ चढ़ाके, श्री विमलप्रभु को पूजेंगे॥

दक्ष नहीं पर, लक्ष्य यही कर, हम भजन गीत गुण गायेंगे।
आज नहीं कल, पा के संबल, सब दर्द कष्ट सह जायेंगे॥
चरण प्राप्तकर, मरण साधकर, निज शुद्ध-आत्म प्रकटायेंगे।
लोक शिखर पर, प्रभु से सटकर, निजधर्म ध्वजा फहरायेंगे॥

(सोरठा)

अर्घ्य नहीं बस अर्घ्य, विमलप्रभु को खोजकर।
देता पदक अनर्घ, पद-पंकज को पूजकर॥

ॐ ह्रीं संसारस्थान वेदना हर्त्ता श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

विमलनाथ निर्मल करें, भक्तों का चैतन्य।
इसीलिए गुण गान कर, तन मन जीवन धन्य॥

(लक्ष्मीधरा)

पूज्य अर्हंत जो सिद्ध हैं बुद्ध हैं।
पूर्ण संसार में अक्षयी शुद्ध हैं॥
अर्चना है उन्हीं विम्मलेश की सदा।
जो हरें शीघ्र भक्तावली की व्यथा॥ 1॥

नाथ का भक्त पै क्यों नहीं ध्यान है।
भक्त को क्यों नहीं प्राप्त निर्वाण है॥
साथ में शोक बाधा बड़े कष्ट हैं।
स्थान ना मोक्ष में क्यों यहाँ त्रस्त हैं॥ 2॥
दुर्गति चार में आतमा घूमती।
इन्द्रियों की महा दासता झेलती॥
आय में, हाय में खाय में जाय में।
चेतना है दुखी पुद्गली काय में॥ 3॥

रोग में भोग में योग में है फँसी।
वेद की वेदना से हुई है हँसी॥
ज्यों कषायें चिदानंद को बाँधती।
तो घटा ज्ञान के सूर्य को ढाँकतीं॥ 4॥

कौन चारित्र धारे महा संयमी।
दर्शनों की कथा जानता उद्यमी॥
द्रव्य से भाव से मैल लेश्या भरे।
कोई भव्यत्व की याद भी क्यों करे?॥ 5॥

रत्न सम्यक्त्व का खो चुका है कहीं।
फर्क सैनी-असैनी दिखे है नहीं॥
रोज आहारकों की कमी है नहीं।
है गुणस्थान की तत्त्व चर्चा नहीं॥ 6॥

जीव-सम्मास, है किन्तु ना मेल है।
व्यर्थ पर्याप्तियों की भरी जेल है॥
प्राण की त्राण दे प्राणियों को सजा।
कौन संज्ञा भरी धार में ना बहा॥ 7॥

उप्पयोगों भरी संपदा लापता।
ध्यान वाली अवस्था बनी आपदा॥
आस्रवों के हुए कार्य कैसे यहाँ।
जाति या संकुलों से बँधे हैं यहाँ॥ 8॥

रोज चौबीस ठाणा हमें आपकी।
याद दे रोक ले वेदना पाप की॥
है यही प्रार्थना आपसे भक्त की।
मात्र स्वीकार हो भावना व्यक्त की॥ 9॥

हो हमारा नहीं जन्म चौबीस में।
हो हमारा कभी जन्म चौबीस में॥
कार्य आसान हो नाथ! आशीष से।
वंदना है तुम्हें टेक के शीश से॥ 10॥

भक्त का माँगना एक दस्तूर है।
प्राप्त जो भी हमें सर्व मंजूर है॥
कष्ट ना कर्म-संसार दे पाओगे।
'सुव्रती' भक्त चौबीस सा-बनाओगे॥ 11॥

(सोरठा)

किसे हुआ क्या प्राप्त, अपनी-अपनी बात है।
विमलप्रभु को नत माथ, मिलती हर सौगात है॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

(दोहा)

विमलनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, विमलनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इति श्री विमलनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

नगर 'ताल-बेहट' जहाँ, मूल पार्श्वभगवान्।
पूर्ण हुआ जिनचरण में, विमलनाथ विधान॥
दो हजार तेरह दिसम्बर 'मंडे' तेबीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : तीर्थ विहारी गुरुराज....)

श्री विमलनाथ! जिनराज, आज तेरी उतारें।[2]
आरती उतारें..... तेरी मूरत निहारें.....[2]
भक्ति का पाने साम्राज्य, आज तेरी....॥

1.

कब से हैं अखियाँ दर्शन को चाहें।
वीतरागी मुद्रा भक्तों को भायें॥
बस जाओ हृदय में आज,
आज तेरी....॥

2.

माता जयश्यामा के प्यारे से नंदा।
राजा कृतवर्मा के न्यारे आनंदा॥
भक्तों की भक्ति के ताज,
आज तेरी....॥

3.

जिसने भी तुमको मन से पुकारा।
संसार-सिन्धु का पाये किनारा॥
तारण तरण हो जहाज,
आज तेरी....॥

4.

कर्मों से मैले 'सुव्रत' अकेले।
हमको बना लो अलबेले चेले॥
ऋद्धि-सिद्धि में हों विराज,
आज तेरी....॥